लोक साहित्य और जन चेतना में बौद्धिक दृष्टिकोण

भारती मीणा
शोधार्थी
कोटा विश्वविद्यालय
राजस्थान

प्रस्तावना

लोक साहित्य और संचेतना के मध्य पारस पर अंतर संबंध अत्यंत जैन है जिससे समाज की परंपराएं और संस्कृति परिलक्षित होती है। लोक साहित्य मौखिक रीति नीतिगत होता है,यह मात्र वाचनिक है जिसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित किया जाता रहा है। इसमें लोक मानस के सुख समृद्धि दुख रख विराग और हर्ष उल्लास आदि की अभिव्यक्ति परिलक्षित होती है। लोक साहित्य साधारण जन भाव को सहज और स्वतंत्र सरल माध्यम में दर्शाता है जिससे विभिन्न सामाजिक रीति नीति मान्यताएं परंपराओं का पता चलता है। लोक साहित्य कथाओं गीतों कहावतें लोकोक्तियां और मृत्यु द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी आगे पहुंचता रहता है। जन चेतना ही साधारण जनता की जागरूकता को बढ़ाने का कार्य करती है जो लोक साहित्य के साथ घंटा से संबद्ध है।

जन चेतना को प्रमुख रूप से आकार देने और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने के साथ-साथ यह संस्कृत अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली माध्यम भी है और इस लेख में जन चेतना और लोक साहित्य के मध्य बौद्धिक दृष्टिकोण से संबंध को ही विश्लेषित किया जाना है। लोक साहित्य समाज के उस भाग की कृति है जो लिखित साहित्य की औपचारिकता से मुक्त होकर सहज और सरल स्वाभाविक रूप से बात कहता हो तभी लोक साहित्य का स्वरूप और महत्व भी बनता है। इसमें लोक कथाएं जैसे पंच तंत्र की कहानी लोकगीत जैसे श्रम गीत भक्ति रस के गीत भजन ख्याल लोकोक्तियां आदि सम्मिलित हैं, जिसमें व्यावहारिक दार्शनिक मूल्य आधारित शैक्षिक दृष्टिकोण परिलक्षित होता है।

समाज को एकजुट करने और व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करने हेतु भारतीय लोक कथाओं में नीति साहस और समुदायकता के मूल्य अक्सर उभरते हैं। समावेश करना लोक साहित्य का एक प्रमुख गुण है जो किसी वर्ग विशेष या समुदाय तक ही सीमित न होकर समाज के सभी वर्गों को समान स्तर पर अवसर वह मंच प्रदान करता है बौद्धिक स्तर पर जन चेतना को व्यापक और चलायमान बनाने में यही समावेशित सहायक सिद्ध होती है। लोक साहित्य के अंतर्गत आने वाले साहित्य में समाज को विभिन्न समस्याओं जैसे

असमानता शोषण और शिक्षा अन्य आदि प्रदर्शित होता है जिनसे निपटने के लिए समाज में सामूहिक रूप से जागरूकता का कार्य करते हैं लोक साहित्य उदाहरण के तौर पर समझे तो मध्यकालीन भारत में सामाजिक सुधार और संभव को बढ़ावा दिया गया जो भक्ति काव्य और सूफी गीतों से संभव हो सका ।यह समाज की सकारात्मक विचारधारा और जागरूकता को बताती है जिस समय परिस्थिति के अनुसार बदल जाया जा सके। लोक साहित्य इस विचारधारा का मार्गदर्शन के रूप में भी कार्यरत करता है जो समाज की विभिन्न समस्याओं को बताने के साथ-साथ उसके समाधान हेतु भी तत्पर रहता है। बौद्धिक स्तर पर देखें तो लोक साहित्य लोगों का साहित्य है जो जन चेतना को भी प्रभावित करने का एक प्रभावशाली माध्यम है जाहिर है कि यह जन सामान्य की भावनाओं और भाषा से संबद्ध होता है। लोक साहित्य के द्वारा जनसाधारण को प्रेरित किया जा सकता है जिसके अनेकों उदाहरण ऐतिहासिक दृष्टि से देखे जा सकते हैं जैसे स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विभिन्न जोशीले गीतों नाटकों द्वारा जनता को प्रोत्साहित किया जाता था जिसे अंग्रेजी शासन के खिलाफ जनता जागृत हो सकी जो की जन चेतना जागृति का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण रहा "वंदे मातरम" जैसे गीतों ने जन चेतना को जागृत कर राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ावा दिया वहीं राजस्थान के संदर्भ में यदि कहे तो कई वीर राजाओं के युद्ध कौशल को गीतों ,कवितावलियों के माध्यम से बताया जाता था उदाहरण के तौर पर पृथ्वीराज रिसो में वीर योद्धा पृथ्वीराज की वीरता और शौर्य का चंद्रवरदाई द्वारा बखूबी बखान किया गया है । इस प्रकार आधुनिक समय में भी लोक साहित्य में सामाजिक मुद्दे जैसे स्वच्छता अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अथवा आज का ही प्रचलित एक पेड़ मां के नाम अभियान जिनसे जन चेतना और जागरूकता लाने में मदद मिलती है।पर्यावरण संरक्षण शिक्षा लैंगिक असमानता अधिकारों के लिए जागृति नई तकनीकी अधिकारों और दुरुपयोग को रोकने के लिए साइबर अपराधों की रोकथाम आदि के लिए भी लोक भाषा और लोक गीतों द्वारा जन चेतना प्रचारित प्रसारित की जाने लगी है। उदाहरण के तौर पर राजस्थान में स्वच्छता मिशन के तहत नगर निगम द्वारा साफ सफाई की प्रेरणा हेतु जन चेतना जागृत करने के लिए लोग भाषा और प्रवृत्ति के अनुसार गीत के माध्यम से घर-घर जाकर कूड़ा उठाने वाली गाड़ी कचरा एकत्रित करती है और गीत में का लक्ष्य भी हर किसी को कूड़ा कहीं इधर-उधर ना फेंक कर कूड़ा स्थल पर ही रखने को प्रेरित करता हुआ प्रसिद्ध होता लोकगीत "गाड़ी वाला आया घर से कचरा निकाल" जिसे सुनकर जनमानस को स्वच्छता के प्रति सचेत करना है| इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा अभियान में सभी बालकों को शिक्षा का समान अवसर मिले इस हेतु स्कूल चलें। हम जैसे गीतों से लक्ष्य प्राप्ति का तरीका भी अपनाया था बौद्धिक दृष्टिकोण से लोक साहित्य का बौद्धिक विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि यह जीवंत और गतिशील प्रक्रिया है जो बदलते समाज के बदलते स्वरूप को दर्शाता है इसमें प्रतीक, रूपक और कथानक समाज की मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक गहनता स्पष्ट होती है। उदाहरण स्वरूप समाज को आत्ममंथन। के लिए उकसाने हेतु लोक कथाओं में मानव के अवगुणों और कमियों को तुलनात्मक रूप से दर्शाने के लिए पशु पक्षियों के पात्र द्वारा दर्शाए जाते हैं। बौद्धिक दृष्टिकोण से लोक साहित्य का अध्ययन हमें ये भी बदलता है कि लोकसाहित्य कभी कभी सामाजिक सकारात्मक परिवर्तन का एक बड़ा उत्प्रेरक माध्यम हो सकता है जनता को शिक्षित दीक्षित कर जन चेतना को जागृत करता है तथा सामूहिक रूप से कुछ परिवर्तन के लिए प्रेरित भी करता है। आधुनिक संदर्भ में सभी माध्यमों

से जन चेतना को अधिकाधिक प्रेरणा मिली है और सोशल मीडिया माध्यमों, डिजिटल माध्यमों आदि द्वारा लोकसाहित्य, लोकगीत, श्रव्य, दृश्य माध्यमों। और साधनों द्वारा लगाओ। कि अपनी भाषा शैली, नृत्य तथा कहानियों और नाटकों के प्रदर्शन अथवा यूट्यूब आदि द्वारा सब के लिए अपनी बात। अपने लोक संस्कृति और लोक भाषा में व्यक्त करने का सहज सरल माध्यम मिला जिससे पिछली पीढ़ी के कुछ जागरूक नागरिक को कमियों, गीतकारों, शिक्षकों, उम्मदराज व नई महिला शक्तियों संस्थानों आदि द्वारा सरल इंटरनेट व जन संचार माध्यमों से अपनी लोक भाषा और लोक संस्कृति को बता कत। कलाओं, परंपराओं अनुमति नीतियों को एक निजी दोस्ती निधि तक हस्तांतरण के लाभ का अवसर मिल पाया बौद्धिक दृष्टिकोण से यह भी महत्वपूर्ण विचारणीय। सच में है कि लोकसाहित्य संरक्षण हेतु इसके प्रयोग और सही उपयोग करने में संतुलन बनाना आवश्यक है, जिससे और नवीन तकनीकी युग में लोकसाहित्य अपनी मौलिकता न होने पाए, इसके संरक्षण संवर्धन हेतु बौद्धिक समुदाय को सोच समझकर कदम उठाने होंगे परम्पराओं का संरक्षण व उचित हस्तांतरण हेतु सावधानी से इसकी प्रासंगिकता बनाए रखना होगा और उसी अनुरूप नवाचार करना होगा।

डॉक्टर रवींद्र भ्रमण ने लिखा भी है कि लोग का कथा साहित्य अत्यंत विशाल होता है। प्रायः सभी देशों के लोग जीवन में विभिन्न प्रकार की कथा कहानियां प्रचलित होती है और बे शिक्षित, अशिक्षित, दोनों ही प्रकार के समुदाय की परंपरागत मौखिक संपत्ति होती है लोककथाएँ मानव जाति की आदिम परंपरा, कथाओं और उसके विभिन्न प्रकार के विश्वास ओका वास्तविक प्रतिनिधित्व करती है। लोककथाएँ मनोरंजन के साथ साथ समाज उपयोगी। होती है जो पौराणिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और आलोकित राजा रानी पशु पक्षी परी भूत प्रेत देवी देवता पर केंद्रित भी हो सकती है।

निष्कर्ष:

जन चेतना और लोक साहित्य का प्रतीक संबंध है तथा परस्पर पोषक पूरक भी हैं। लोक साहित्य, समाज की संस्कृति और नैतिक विरासत को संजोए। से संभालकर संवर्धन और संरक्षित भी करता है। इसके साथ ही जन चेतना की जागृति और संचेतना से प्रेरित कर सकते शक्ति पुंज का कार्य भी करता है। भौतिक दृष्टि से विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि सामाजिक स्वरूप को सही दिशा और गति में लोकसाहित्य की महत्ती भूमिका है जो सामाजिक एकता के लिए भी जिम्मेदार है क्योंकि लोग साहित्य के माध्यम से। कि समाज के सभी पहले दिन में समस्याएँ और समाधान निकलते हैं और प्रगतिशील वैचारिक समृद्धि संभव हो पाती है।

अतः लोक साहित्य की महोत्सव को पहचान कर इसे परंपरागत तरीके से और समृद्धिशाली तथा नवाचार और तकनीकी माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी का हस्तांतरण समझदारी से करना होगा तथा सार्थक सक्रियता बढ़ानी होगी। जिससे लोक साहित्य से न केवल सांस्कृतिक धरोहर ही। बल्कि इतिहास और समाज के साथ को समृद्ध कर और अधिक गतिशीलता में योगदान संभव हो सकेगा।

संदर्भ सूची:--

1. द्विवेदी, हज़ारी प्रसाद। भक्ति आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008।
2. शर्मा, रामविलास। भारतीय जन चेतना और साहित्य। राजकमल प्रकाशन, 1995।
3. सिंह, नाम वर। लोक साहित्य और संस्कृति। राजकमल प्रकाशन, 2001।
4. वर्मा, रावेंद्र कुमार। भारतीय लोक साहित्य का इतिहास। साहित्य भवन, इलाहाबाद, 2010।
5. वाल्मीकि, ओमप्रकाश। दलित साहित्य की भूमिका और दिशा। राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012।
6. सिंह, रामनारायण। भारतीय लोककथाएँ और संस्कृति। साहित्य सदन, वाराणसी, 2005।
7. भारती, धर्मवीर। लोक साहित्य का सौंदर्य शास्त्र। साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2003।
8. शर्मा, सुरेश। सांस्कृतिक अध्ययन और जन संवाद। वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014।